बीजीय व्यंजक

1. जिस व्यंजक में एक ही पद होता है, वह एक पद व्यंजक कहलाता है।
2. एक से अधिक पद वाला व्यंजक, बहुपदी व्यंजक कहलाता है।
3. जब संख्याएं अथवा अक्षर आपस में +, -, ×, ÷ आदि चिन्हों से जुड़े हुए होते हैं, तो उसे बीजीय व्यंजक कहते हैं।

4. दो एकपदी व्यंजकों का गुणनफल इनके गुणांकों के गुणनफल के साथ इनके अक्षरों (बीजों) के गुणनफल रखने से प्राप्त होता है।
5. किसी द्विपदी व्यंजक को एकपदी व्यंजक से गुणा करने के लिए द्विपदी व्यंजक के प्रत्येक पद को एकपदी व्यंजक से गुणा किया जाता है।

6. जब किसी व्यंजक में से अन्य व्यंजक को घटाना होता है तो घटाये जाने वाले पदों के चिन्ह बदलकर शेष क्रिया योग की क्रिया की तरह की जाती है।
7. दो द्विपदी व्यंजकों को गुणा करने के लिए एक द्विपदी व्यंजक के प्रत्येक पद को दूसरे द्विपदी व्यंजक के प्रत्येक पद से गुणा करते हैं और फिर इन गुणनफलों को जोड़ लेते हैं।

8. जिन बीजीय पदों की चर राशि समान हो एवं उनके घात भी समान हो, तो वे सजातीय बीजीय पद होते हैं।
9. कोई व्यंजक द्विपदीय, त्रिपदीय अथवा बहुपदीय तभी हो सकता है जब उसके सभी पद विजातीय होते हैं।

SMC Education- Reetexam.in